

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, यशायाह, सत्र 28, ईसा। 58-59

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 28, यशायाह अध्याय 58 और 59 है।

आइये मिलकर प्रार्थना करें. पिता, हम इस शाम के लिए आपको धन्यवाद देते हैं। हम आपके शब्द के लिए फिर से धन्यवाद देते हैं। हम आपकी भावना के लिए फिर से धन्यवाद देते हैं।

हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने हमें हमारे पथ पर चमकने के लिए अपनी रोशनी दी है। और हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें यह पहचानने में मदद करेंगे कि वह प्रकाश अच्छे और बुरे की ओर क्या इशारा कर रहा है और आप हमें सीखने, प्राप्त करने, लागू करने और जीने में मदद करेंगे। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

हम आज रात अध्याय 58 और 59 को देख रहे हैं और वे इस खंड का हिस्सा हैं जिसे मैंने धार्मिकता, सेवकत्व का चरित्र कहा है। वैसे, वहाँ पीछे छोटे काउंटर पर कुछ पूर्व अध्ययन गाइड शीट हैं।

और विशेष रूप से, रूपरेखा और पृष्ठभूमि इत्यादि के साथ पहले पाठों में से कई हैं। इसलिए, यदि आपको अपना संग्रह भरने की आवश्यकता है, तो इसे वहाँ देखें। अन्यथा, वे कूड़ेदान में चले जाते हैं।

तो इसके प्रति सचेत रहें. तो यह अध्याय 56 से 66 है। पिछले सप्ताह, मैंने आपको बताया था कि ऐसा प्रतीत होता है कि ये अध्याय एक चिआस्म के रूप में व्यवस्थित हैं।

चियास्म एक समानांतर संरचना है। तो, आपके पास A, B, C, D, E, D', C', B', और A' है। तो यह अंतिम खंड इस पहले खंड के समानांतर है।

दूसरा खंड एक-दूसरे के समानांतर है, तीसरा एक-दूसरे के समानांतर है, चौथा एक-दूसरे के समानांतर है, और पांचवां त्रिभुज के शीर्ष पर, सीढ़ी के शीर्ष पर अकेला खड़ा है। ऐसा करने का एक कारण यह है कि यदि आपके पास यह अनुभाग नहीं है, तो आप उद्देश्य से चूक सकते हैं। परमेश्वर जो कर रहा है वह क्यों कर रहा है, जैसा कि हम आज रात अध्याय 59, श्लोक 16 से 21, और 63, 1 से 6 में देखेंगे? मसीहा के कार्य के परिणामस्वरूप प्रकाश क्यों चमक रहा है? आह, यह इसलिए है कि दुनिया को पता चले।

इसलिए, हमारा ध्यान इस पर केंद्रित नहीं है कि यह सब क्या है, यह किसकी सहायता में है। हम समस्या पर अपना ध्यान भी नहीं खोते हैं। ईश्वर की रोशनी खोई हुई दुनिया में कैसे चमक सकती है, इस तथ्य को देखते हुए कि हम अपने आप में धर्मी होने में असमर्थ हैं? और फिर, वह बात फिर से कही गई है।

यह विश्वास न करें कि आप अपने आप में एक धर्मी व्यक्ति हो सकते हैं। यह एक उपहार है, ईश्वर की ओर से एक उपहार है, लेकिन यह एक आवश्यक उपहार है। सिर्फ इसलिए विश्वास न करें क्योंकि आप नहीं कर सकते, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

नहीं, परमेश्वर ने वास्तव में हमारी ओर से अपना कार्य किया है ताकि उसकी रोशनी हममें से निकलकर संसार में चमक सके। तो, हम देख रहे हैं, हमने पिछले सप्ताह अध्याय 56 और 57 को देखा, धर्मी विदेशियों पर यह प्रारंभिक खंड, और फिर अधर्मी यहूदियों के बारे में पहला बयान। हम आज रात 58 और 59, शेष भाग बी और भाग सी के बारे में बात करना जारी रखेंगे। अगले सप्ताह, हम यह सब, 63 से 66 तक कवर करने जा रहे हैं, क्योंकि कई मायनों में यह उसी का दोहराव है जो हमने किया है पहले ही बात हो चुकी है।

फिर अपनी आखिरी रात में, हम वापस आएंगे और अध्याय 60 से 62 के बारे में बात करेंगे, जो प्रक्रिया का चरम बिंदु है। ठीक है, तो आज रात, अध्याय 58 और 59। जोर से चिल्लाओ, पीछे मत हटो, तुरही की तरह अपनी आवाज ऊंची करो, मेरे लोगों को उनके अपराध घोषित करो, याकूब के घराने को उनके पाप बताओ, फिर भी वे मुझे प्रतिदिन खोजते हैं, वे प्रसन्न होते हैं मेरे चालचलन को जानो, मानो वे ऐसी जाति हो जो धर्म करती हो, और आपके परमेश्वर का न्याय न त्यागती हो, वे मुझ से धर्म का न्याय मांगते हैं, और परमेश्वर के निकट आने से प्रसन्न होते हैं।

अब यहाँ क्या समस्या है? पाखंड, मेल कहते हैं, उनकी हृदय स्थिति। तो वे बाहर से क्या कर रहे हैं? ठीक है, वे बातें तो कर रहे हैं, लेकिन वे सही रास्ते पर नहीं चल रहे हैं। धर्म के रूप, वे मुझे प्रतिदिन खोजते हैं, वे मेरे तरीकों को जानकर प्रसन्न होते हैं, वे मुझसे धर्मी न्याय मांगते हैं, वे ईश्वर के निकट आने में प्रसन्न होते हैं।

भला, कौन पादरी नहीं चाहेगा कि उसका चर्च उन लोगों से भरा रहे? ठीक है ठीक है। ठीक है, वे वास्तव में भगवान की पूजा नहीं कर रहे हैं, वे वास्तव में उसे अपने लिए नहीं खोज रहे हैं। मम्म-हम्म, मुझे लगता है कि यह ठीक है, लेकिन मैं उन शब्दों को देखता हूँ और वे मुझे चिंतित करते हैं।

मैं प्रतिदिन प्रभु की खोज करता हूँ, मैं उसके मार्गों को जानकर प्रसन्न होता हूँ, मानो वे एक राष्ट्र हों जिन्होंने धार्मिकता की ओर अपने ईश्वर की कृपा को नहीं त्यागा। हमने इस बारे में कई बार बात की है। इसे फिर से कहें, मिशपत शब्द का अनुवाद आदेश के रूप में किया जा सकता है।

ओह, मैंने मार्कर हटा दिया। अक्सर अनुवादित न्याय, या निर्णय, या फैसले, और वे सभी सही हैं, उनमें कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन यह पर्याप्त बड़ा नहीं है। जीवन के लिए ईश्वर की दिव्य व्यवस्था, अस्तित्व के लिए ईश्वर की दिव्य व्यवस्था, और इसमें कानूनी न्याय शामिल है, लेकिन इसमें इससे भी अधिक शामिल है।

तो, मुझे लगता है, इस सवाल का जवाब देने के लिए, वे भगवान के मिशपत को कैसे त्याग रहे हैं? हमें अगले छंदों पर जाना होगा। हमने उपवास क्यों किया और तुम्हें दिखाई नहीं पड़ा? हम ने अपने आप को क्यों दुःख दिया है, और तुम को कुछ भी मालूम नहीं? वे उपवास क्यों कर रहे हैं?

उन दो वाक्यों के अनुसार. वे भगवान का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, है ना? हम चाहते हैं कि तुम देख लो कि हम ने उपवास किया है, हम चाहते हैं कि तुम यह जान लो कि हम ने अपने आप को कष्ट दिया है।

पाने के लिए कर रहे हैं. बिल्कुल। मैंने पृष्ठभूमि में उल्लेख किया था कि बाइबिल उपवास के बारे में एक तरह से अस्पष्ट है।

केवल एक ही स्थान है जहां इसकी आज्ञा दी गई है, और वह प्रायश्चित का दिन है। जब आपको स्वयं को कष्ट देना होता है, और दिलचस्प बात यह है कि यही वह शब्द है जिसका उपयोग किया जाता है, ऐसा नहीं है, उनके पास कोई हिब्रू शब्द नहीं है जिसका अर्थ तेजी से होता है, यह स्वयं को कष्ट देना है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे पिछले वर्ष के दौरान किए गए सभी अनजाने पापों के लिए पश्चाताप में स्वयं को कष्ट दें।

तो यह दुःख का कार्य है। यह पश्चाताप का कार्य है। यह खेद का कार्य है।

जोएल 1.13 में, इसका आदेश नहीं दिया गया है लेकिन राष्ट्रीय पश्चाताप की अभिव्यक्ति के रूप में इसका फिर से आग्रह किया गया है। उन पर टिड्डियों का प्रकोप आ गया है, और उनसे पश्चाताप करने और उपवास करने का आग्रह किया गया है, क्षमा करें, पश्चाताप करने और उपवास करने का आग्रह किया गया है। नहेमायाह ने उपवास किया और प्रार्थना की जब उसने यह भयानक समाचार सुना कि यरूशलेम की दीवारें सौ वर्षों के बाद भी खंडहर थीं।

इसलिए, जब उपवास किया जाता है, तो इसका उद्देश्य हमेशा पश्चाताप की अभिव्यक्ति होता है। लेकिन मुझे लगता है कि अधिकांश समय, उपवास का अभ्यास ईश्वर से कुछ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। राक्षस-ग्रस्त व्यक्ति में, परिवर्तन के पहाड़, पहाड़ से नीचे आने के बाद, शिष्य राक्षस को बाहर निकालने की कोशिश कर रहे हैं और वे ऐसा नहीं कर सकते।

यीशु ऐसा करते हैं, और बाद में वे कहते हैं, हम उसे बाहर क्यों नहीं निकाल सके? दिलचस्प बात यह है कि इसमें पाठ्य संबंधी समस्या है। किंग जेम्स कहते हैं कि यह प्रकार केवल उपवास और प्रार्थना से ही सामने आता है। सबसे पुरानी पांडुलिपियाँ कहती हैं कि यह प्रकार केवल प्रार्थना से ही सामने आता है।

अब, मुझे लगता है कि मुझे पता है कि उपवास बाद की पांडुलिपियों में क्यों आया क्योंकि स्पष्ट रूप से यीशु एक बार की प्रार्थना सभा के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। शायद शिष्यों ने पहली बार प्रार्थना नहीं की जब उन्होंने दुष्टात्मा को बाहर निकालने का प्रयास किया। मैं आपको गारंटी देता हूं कि जब उन्होंने उसे बाहर निकालने की कोशिश की तो उन्होंने दूसरी बार प्रार्थना की।

मुझे लगता है कि यीशु जो कह रहे हैं वह यह है कि यह प्रकार केवल एक स्थायी आध्यात्मिक जीवन और आध्यात्मिक शक्ति के परिणामस्वरूप सामने आता है। और मुझे लगता है कि उपवास उस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए बाद की पांडुलिपियों में आता है, कि यह कुछ ऐसा है जिसे समय के साथ होना चाहिए। और इसलिए मुझे लगता है कि उस परिच्छेद में यही चल रहा है, लेकिन यह दिलचस्प है।

तो उनके उपवास के बारे में हमें अगले श्लोक में एक कुंजी मिलती है। अब, मेरा प्रश्न यह है कि क्या आपको लगता है कि वास्तव में उन्होंने झगड़ा करने, लड़ने और दुष्ट मुक्का मारने के लिए उपवास क्यों किया? यहाँ क्या चल रहा है? वह किस बारे में बात कर रहा है? चर्च के भीतर संघर्ष? संभवतः. परन्तु ध्यान दीजिए, वह कहता है, कि उपवास के दिन तुम अपना सुख चाहते हो, और अपने सब कर्मचारियों पर अन्धेर करते हो।

चूँकि मैं अति धार्मिक हूँ इसलिए मैं अपने कार्यकर्ताओं के साथ जो चाहूँ कर सकता हूँ। ओह, मुझे लगता है ऐसा होता है। मुझे लगता है कि उन्हें लगता है कि वे भगवान के करीब हैं।

और यशायाह कह रहा है, नहीं, तुम नहीं हो। खैर, मुझे लगता है कि एक संभावना यह है कि हमें यहां सेमेटिक अतिशयोक्ति मिली है। वास्तव में आप अपने कार्यकर्ताओं के प्रति निर्दयी हो रहे हैं, और यशायाह का कहना है कि यह उनके साथ हाथापाई करने जैसा है।

फिर से, मुझे लगता है, वह शायद अपनी बात मनवाने के लिए चरम सीमा तक जा रहा है। आप उपवास इसलिए कर रहे हैं ताकि आप अपने कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार कर सकें और इसके बारे में अच्छा महसूस कर सकें। वास्तव में, आप जिस चीज़ के लिए उपवास कर रहे हैं वह लोगों से लड़ना है।

मुझे लगता है कि यहाँ यही चल रहा है। वह उनके उपवास के वास्तविक परिणाम को बहुत ही चरम प्रकार की भाषा में व्यक्त कर रहा है। मैंने तुमसे ज़्यादा चॉकलेट छोड़ दी।

बिल्कुल। बिल्कुल। मुझे लगता है कि बिल्कुल यही बात है, और वह उस बात को स्पष्ट करने की कोशिश करने के लिए इस कड़ी भाषा का उपयोग कर रहे हैं।

और मुझे लगता है कि यह श्लोक 2 तक जाता है। मानो वे एक राष्ट्र थे जिन्होंने धार्मिकता की और अपने परमेश्वर के पाप को नहीं त्यागा। खैर, भगवान का दिव्य आदेश यह है कि हम अपना पूरा जीवन उसी के प्रतिबिंब के रूप में जिएं। सिर्फ हमारा धार्मिक जीवन ही नहीं, बल्कि हमारा पूरा जीवन।

और मुझे लगता है कि यही बात उन पहले दो छंदों में बताई जा रही है, ओह हाँ, वे भगवान की तलाश कर रहे हैं। वे एक अद्भुत धार्मिक अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं। आपका क्या मामला है? आप इससे बेहतर तरीके से घर की सफाई क्यों नहीं कर सकते? भगवान कहते हैं कि आप संबंध नहीं देखते हैं, है ना? ऐसा लगता है कि यह उस अमीर शासक की तरह है जो जा रहा था और उसने प्रतिभाओं को व्यक्तिगत श्रमिकों के पास छोड़ दिया और फिर वह चला गया और हमें नहीं पता कि वह क्या करने गया था।

शायद यह पीछे हटना, उपवास करना और न जाने क्या-क्या था। और वह वापस आता है और कुछ लोगों ने काम किया था और कुछ लोगों ने काम नहीं किया था और कुछ लोग जानते थे कि वे कुछ नहीं कर रहे थे। कुछ लोग पार्टी कर रहे थे।

हाँ हाँ हाँ। हाँ। आप जानते हैं कि हम भी उपवास में हैं और यह एक तरह से आप पर प्रभाव डाल रहा है।

ऐसा करने में, वास्तविक उपवास ईश्वर के प्रेम को दूसरों पर कार्य करने की अनुमति देता है और इसलिए उपवास वास्तव में ईश्वर के प्रेम का कार्य है। यह इसे बाहर आने की अनुमति देता है। आप इसमें बिल्कुल भी शामिल नहीं हैं।

उपवास से आपका स्वभाव दब जाता है और इसलिए आपके कार्य वास्तव में प्रेम के कार्य बन जाते हैं। हां हां हां। मुझे लगता है कि इसमें कुछ सच्चाई है।

मुझे लगता है कि मुख्य बात यह है कि उपवास पश्चाताप की अभिव्यक्ति है और आप लोग स्पष्ट रूप से किसी भी चीज़ से पश्चाताप नहीं कर रहे हैं। आप बस यह कोशिश कर रहे हैं कि भगवान आपको आशीर्वाद दें। और क्योंकि आप भगवान को हेरफेर करने की कोशिश कर रहे हैं, तो उन लोगों को हेरफेर करना ठीक है जो आपके लिए काम करते हैं।

क्या यह उनके जन्मसिद्ध अधिकार की अवधारणा पर वापस जा सकता है? मम-हम्म. और भगवान के लोग और आप जानते हैं, मैं यहाँ हूँ। हां।

और इसलिए बाकी सभी चीज़ों का क्या? हां हां। मैं एक अच्छा यहूदी हूँ और भगवान ने हमें कैद से बचाया है क्योंकि हम यहूदी हैं, किसी अन्य कारण से नहीं। और मैं अपने यहूदी धर्म का पालन करने जा रहा हूँ और भगवान कहते हैं, आप पूरी बात भूल गए हैं, है न? डेविड? क्या यह कोई आज़ादी जैसी चीज़ है? ज़रूर।

या इसी के समान? ज़रूर। और फरीसीवाद कब शुरू हुआ? खैर, हम निश्चित रूप से नहीं जानते। आप जानते हैं, हमारे पास मलाकी और मैथ्यू के बीच 400 साल हैं, और उससे भी अधिक, मैथ्यू शायद 65 या 70 ईस्वी के आसपास है, लेकिन पुराने और नए नियम के बीच, मलाकी और ईसा मसीह के आगमन के बीच है।

हम राजनीतिक स्थिति के बारे में थोड़ा-बहुत जानते हैं, जो काफी भयावह थी। पिछले 100 वर्षों या 150 वर्षों में, उनके पास एक राज्य था, लेकिन यह एक अविश्वसनीय रूप से भ्रष्ट राज्य था और पुरोहितवाद भी उतना ही भ्रष्ट था। हत्याएं, पौरोहित्य की खरीद-फरोख्त, सब कुछ।

इस समय के दौरान, और संभवतः 150 ईसा पूर्व से लेकर ईसा मसीह के समय तक पिछले 150 वर्षों के दौरान, हमें बताया गया है कि यहूदी धर्म के लगभग 80 विभिन्न संप्रदाय थे। कुछ इस तरह कि फ्रांस में कितने राजनीतिक दल हैं? और यह एक तरह से वैसा ही सौदा है। हर 10 लोगों का अपना संप्रदाय होता है।

खैर, प्रमुख संप्रदाय, ठीक है, शायद मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए। तीन प्रमुख संप्रदाय सटूकी थे, जो मूल रूप से कुलीन वर्ग थे। वे ही लोग थे जो शो चला रहे थे।

महायाजक सदूकियों और फरीसियों का हिस्सा थे, मैं एक मिनट में और कट्टरपंथियों के बारे में और अधिक बताऊंगा। ज़ीलॉट्स एक राजनीतिक समूह था जो रोमनों का सफाया करने और उनके पास मौजूद राज्य को बहाल करने के लिए दृढ़ संकल्पित था, जिसका राज्य इतना गड़बड़ था कि दोनों पक्षों ने रोमनों को अंदर आने और उनकी मदद करने के लिए आमंत्रित किया, जिससे रोमन खुश थे। लेकिन, आप जानते हैं, हम यहां हैं।

आप नहीं समझते कि रोमन यहाँ कैसे आये, है ना? लेकिन हम उनसे छुटकारा पाने जा रहे हैं। तो, आपको पता चल गया कि ये तीन संभवतः सबसे बड़े तीन समूह हैं। और दिलचस्प बात यह है कि आपके पास शिष्यों में से कम से कम एक, साइमन द ज़ीलॉट है।

लेकिन फरीसी कह रहे हैं, और फिर, मुझे विश्वास है कि यीशु उनके ऊपर थे क्योंकि वे राज्य के बहुत करीब थे। यीशु के पास सदूकियों से कहने के लिए बहुत कम है। ये शक्तिशाली अभिजात वर्ग हैं जो धर्म का उपयोग अपने उद्देश्यों के लिए कर रहे हैं, उनकी परवाह न करें।

परन्तु फरीसी, यीशु उन सब पर है। और आपको याद है कि एक्ट्स के शुरुआती दिनों में 3,000 फरीसियों को परिवर्तित किया गया था। तो ये वो लोग हैं जो कह रहे हैं, हम समझते हैं कि हम कैद में क्यों गए।

हम बन्धुवाई में चले गये क्योंकि हमने कानून तोड़ा था। खैर, अब हम ऐसा नहीं करेंगे। हम परमेश्वर के नियम का पालन करने जा रहे हैं।

हम इसे पूरी तरह से बनाए रखेंगे, यहां तक कि अपनी अलमारी में जड़ी-बूटियों का दशमांश रखने तक भी। एक भाव है जिसमें यीशु कहते हैं, यह सब ठीक है और अच्छा है। लेकिन आप इसका उपयोग केवल अपने आप को फुलाने के लिए कर रहे हैं।

क्या आपको फरीसी और मंदिर में कर वसूलने वाले के बारे में यीशु की कहानी याद है? मैं भगवान का शुक्रिया अदा करता हूं कि मैं इस कर संग्रहकर्ता जैसा नहीं हूं। तो हाँ, फरीसियों के साथ जो हो रहा है वह 400 साल बाद भी इसी तरह की बात है। तो भगवान किस प्रकार का तथ्य चाहता है? श्लोक पांच.

खैर, और फिर छंद छह में, वह मूल रूप से वह कहता है जो वह छंद पांच में नहीं चाहता है। वह चाहता है कि यह दूसरों के बारे में हो। हाँ।

हाँ। मैथ्यू 25. हाँ.

हाँ। यदि आप खाना बंद करना चाहते हैं तो ठीक है। अपना भोजन भूखों को दो।

क्या? मुझे वैसा क्यों करना चाहिए? यदि आप कुछ करना बंद करना चाहते हैं, तो अपने कार्यकर्ताओं को पीटना बंद करें। हाँ। पूरा उद्देश्य अन्य है.

उपवास मुझ पर ध्यान केन्द्रित करता है। और आपको याद है यीशु ने उपवास के बारे में बात की थी। और जब उसने कहा, तुम्हें पता है, तुम उपवास करते हो और तुम अपने गालों पर काला रंग लगाते हो ताकि वे खोखले दिखें और तुम सचमुच भूखे दिखो।

और लोग कहते हैं, हे भगवान, क्या वह धर्मी नहीं है? यीशु कहते हैं, यदि तुम उपवास करने जा रहे हो, तो एक कोठरी में चले जाओ, और किसी को भी पता मत चलने दो कि तुम क्या कर रहे हो। यह आपके बारे में नहीं है। लेकिन फिर से, मैं कहना चाहूँगा कि बाइबल में सच्चा उपवास पश्चाताप के बारे में है।

इसलिए, तीन महीने से बारिश नहीं हुई है। अच्छा, चलो व्रत का आह्वान करें। तो, भगवान, हम दो दिनों तक कुछ नहीं खाएंगे।

तो, आपको हमारे लिए बारिश भेजनी होगी। भगवान कहते हैं, क्यों? खैर, हम अपने आप को कष्ट दे रहे हैं। यह तो अच्छी बात है।

आप ऐसा क्यों कर रहे हों? खैर, आपको बारिश भेजने के लिए। संभव है कि भगवान बारिश नहीं भेज रहे हैं क्योंकि हम अपने आस-पास के गरीबों पर बहुत अत्याचारी हैं। अरे नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, भगवान, हम आपसे वह करवाने के लिए खुद को कष्ट दे रहे हैं जो हम चाहते हैं।

भगवान कहते हैं कि यदि तुम स्वयं को कष्ट देना चाहते हो, तो दूसरों के लिए स्वयं को कष्ट दो। मुझसे कुछ पाने के लिए नहीं। इसलिए।

दुष्टता के बंधनों को ढीला करो, जुए की पट्टियों को खोलो, उत्पीड़ितों को आज़ाद करो, हर जुए को तोड़ो, अपनी रोटी भूखों के साथ बांटो, और बेघर गरीबों को अपने घर में लाओ। जब तुम नग्न को देखो, तो उसे ढँक लो, और अपने आप को अपनी देह से न छिपाओ। अब आपको यह अहसास हो रहा है कि यीशु यशायाह को पढ़ रहे हैं।

हमने तुम्हें कब नंगा देखा? हमने आपको जेल में कब देखा? हमने तुम्हें कब भूखा देखा? अब, दूसरों के साथ सही व्यवहार, विशेषकर हमसे कमज़ोर लोगों के साथ, यही वा के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है? और यह इतनी बड़ी बात क्यों है? वह हम सबके लिए क्यों आये इसका कारण? ठीक है, दलित हमारे पाप की अभिव्यक्ति हैं। आप दोनों को अलग नहीं कर सकते। आप ईश्वर से प्रेम और दूसरों से प्रेम को अलग नहीं कर सकते।

वे साथ-साथ चलते हैं। यदि आप अन्य लोगों से प्यार नहीं करेंगे, और गरीबों और पीड़ितों की देखभाल नहीं करेंगे, तो आप वास्तव में कैसे कह सकते हैं कि आप भगवान से प्यार करते हैं? ठीक है, मैं आपसे 100% सहमत हूँ। हालाँकि मैं इसे आगे बढ़ाना चाहूँगा।

दूसरों के प्रति प्रेम परमेश्वर के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है? यह अविभाज्य क्यों है? क्या हम उसकी छवि में बने हैं? रिश्तों? क्षमा? पहली आज्ञा? ठीक है, मुझे लगता है कि यह इसके साथ ही चलता है, लेकिन यीशु ने कहा था कि जो हम दूसरों के साथ करते हैं, वही हम उसके साथ भी

करते हैं। हाँ, हाँ, और मैं जानना चाहता हूँ क्यों। मेरा किसी के साथ दयालु व्यवहार करना यीशु के लिए कुछ करना क्यों है? ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें खुद को सबसे गरीब लोगों के साथ पहचानने की प्रवृत्ति है, और इसलिए हम उनके साथ जो करते हैं, वही हम उनके साथ कर रहे हैं।

ठीक है ठीक है। वह पहले हमसे प्यार करता था। मैं अभी भी तुम्हें धक्का देने जा रहा हूँ।

वह अपनी पहचान सबसे गरीब लोगों से क्यों जोड़ता है? सबसे गरीबों के पास कोई शक्ति नहीं है। उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। हाँ, हाँ, मुझे लगता है कि यही बात है।

वे तुम्हें वापस भुगतान नहीं कर सकते। यह मुफ्त है। यह अनुग्रह है, और ईश्वर पूरी तरह से अनुग्रह पर आधारित है।

यदि मैं तुम्हारे लिए कुछ करता हूँ, तो तुम मुझे प्रतिफल दे सकते हो और चुकाओगे, और भगवान कहते हैं, इसमें योग्यता कहाँ है? लेकिन जब हम उन लोगों के लिए काम करते हैं जो हमें वापस भुगतान नहीं कर सकते हैं, तो हम भगवान की कृपा का प्रदर्शन कर रहे हैं, और भगवान पूरी तरह से अनुग्रह के बारे में हैं। तो जब हम श्लोक 8 के अनुसार ऐसा करेंगे, तो क्या होगा? आइए उन्हें सूचीबद्ध करें। नंबर एक क्या होता है? रोशनी।

हाँ। प्रकाश हममें से चमकेगा। उपचारात्मक।

ठीक है, और क्या? धार्मिकता। आप सही होंगे। वह सुनेगा।

वह सुनेगा। खैर, हम यही करते हैं। वह हमारे लिए क्या करता है, और वह इसे 10बी 11 , और 12 में फिर से उठाता है ।

वह आपका मार्गदर्शन करेगा। वह आपकी हड्डियों को मजबूत बना देगा। तुम सींचे हुए बगीचे के समान हो जाओगे।

खंडहरों का पुनर्निर्माण कराया जाएगा। तुम्हें दरार की मरम्मत करने वाला, सड़कों का मरम्मत करने वाला कहा जाएगा। हाँ।

बिल्कुल, बिल्कुल ठीक। जब आप अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भगवान से छेड़छाड़ करने की कोशिश करते हैं, तो यह काम नहीं करेगा। उसके साथ छेड़छाड़ नहीं की जायेगी।

लेकिन जब आप अपनी जरूरतों को एक तरफ रख देते हैं और दूसरों की जरूरतों को पूरा करने की कोशिश करते हैं, तो भगवान कहते हैं, यहाँ, बिल्ली। तो, ये सभी चीजें जिनकी वे लालसा कर रहे हैं, वे चिल्ला रहे हैं, और हम अगले सप्ताह 63 से 64 में देखने जा रहे हैं, विशेष रूप से, वे वास्तव में हैं, वे वास्तव में भगवान पर हैं। भगवान, तुम क्यों नहीं हो? तुम्हें पता है, हम यहाँ हैं।

हम देश में वापस आ गए हैं, और भविष्यवक्ताओं ने ये सभी वादे किए हैं। आप कहां हैं? आप क्या कर रहे हो? आप हमें आशीर्वाद क्यों नहीं दे रहे? और भगवान कहते हैं, तुम्हें यह समझ में नहीं आता, है ना? जब आप मेरा धर्मी जीवन जीते हैं तो आपको उपहार के रूप में ये सभी चीजें मिलती हैं जिन्हें पाने के लिए आप भगवान से छेड़छाड़ करने की कोशिश कर रहे हैं। परन्तु भगवान... पहले राज्य की तलाश करो।

हाँ। हाँ। डेल.

मैं देने जा रहा हूँ. हाँ। और मुझे लगता है कि भगवान उस पर मुस्कुरा देते हैं।

और मुझे लगता है कि वह कहते हैं, यदि आप वही करेंगे जो मैं चाहता हूँ कि आप करें, भले ही सर्वोत्तम उद्देश्यों से कम के लिए भी, मैं आपके लिए हूँ। और मुझे लगता है कि शायद हम सभी ने अपने जीवन में इसका अनुभव किया है। जब हम वास्तव में वफादार रहे, तो शायद सर्वोत्तम उद्देश्यों के लिए नहीं, लेकिन फिर भी, हम वास्तव में दूसरों के लिए जा रहे थे।

भगवान हमसे आधे रास्ते में मिलने को तैयार हैं। मैं ईश्वर के बारे में तो नहीं कह सकता, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए करना एक संघर्ष बन जाता है और यही परीक्षा होती है। अहां।

अहां। अहां। अहां।

जीन कह रहे हैं कि एक समय ऐसा आता है जब हमें सचमुच पूछना पड़ता है कि क्या मैं यह दूसरों के लिए कर रहा हूँ या मैं यह अपने लिए कर रहा हूँ? और यह, यह एक परीक्षा है। और भगवान वह समय लाता है. हाँ।

हाँ। तो, मुझे लगता है कि यह अभी भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या मैं सचमुच परमेश्वर के प्रेम के लिए ऐसा कर रहा हूँ? और, और यह उस चीज़ पर वापस जाता है जो, फिर से, मुझे आशा है कि आपको अस्पष्ट रूप से परिचित लग सकती है।

उत्पत्ति अध्याय दो और उत्पत्ति अध्याय तीन। मुझे बुद्धि चाहिए. मुझे सुंदरता चाहिए.

मुझे आनंद चाहिए. मेरा मित्र साँप कहता है, ईश्वर उन्हें मुझे देना नहीं चाहता और कई मायनों में जीवन का सबसे बड़ा संकट अपनी आवश्यकताओं को ईश्वर के हाथ में सौंप देना है। और कहने के लिए, जीवन में सबसे अच्छी चीजें जो मुझे अपने लिए मिलती हैं वे घातक हैं, और सबसे कम चीजें जो मुझे यहोवा से मिलती हैं वे अंतहीन आशीर्वाद हैं।

यहीं पर हममें से प्रत्येक के लिए लड़ाई लड़नी है। प्रभु यीशु, मैं अपनी जरूरतों को आपके हाथों में सौंपता हूँ, और मैं आपको उन्हें अपने तरीके से पूरा करने की अनुमति देता हूँ। अब, फिर से, अधिकांश समय, वह हमारी क्षमताओं का उपयोग करेगा।

वह हमारे उपहारों का उपयोग करने जा रहा है। लेकिन जब हम कहते हैं, प्रभु यीशु, आइए इसे अपने तरीके से करें तो सब कुछ बदल जाता है। और मैं तुम्हारे आगे नहीं भागूंगा।

मैं, और फिर से, शायद यह आपके लिए थोड़ा परिचित है, मैं आपके रास्ते की प्रतीक्षा करूंगा। और उत्पत्ति अध्याय 12 इसी के बारे में है। भूमि के एक टुकड़े में, विशेषकर आपके नाखूनों के नीचे, कुछ भी आध्यात्मिक नहीं है।

एक बच्चे के बारे में कुछ भी आध्यात्मिक नहीं है, खासकर सुबह दो बजे पूरा डायपर पहनने पर। और प्रतिष्ठा, हमें इसे छोड़ना होगा, है ना? परन्तु परमेश्वर इब्राहीम के पास आता है और कहता है, इब्राहीम, मैं जानता हूँ कि तू क्या चाहता है। क्या आप मुझे वे चीज़ें आपको देने देंगे? और सभी स्वर्गदूतों ने अपनी साँसें रोक लीं।

सारा समय और अनंत काल उस क्षण पर एक बिंदु पर टिका हुआ था। क्या वह हाँ कहेगा? क्या वह परमेश्वर को अपनी ज़रूरतें पूरी करने देगा? या वह कहेगा, नहीं, नहीं, मैं अपनी ज़रूरतें तुमसे बेहतर ढंग से पूरी कर सकता हूँ। मुझे तुमसे डर लगता है।

मुझे तुम पर भरोसा नहीं है। तुम मेरे लिए नहीं हो। मेरे मित्र, साँप ने मुझे यह सब बताया है।

और इब्राहीम ने कहा, ठीक है। और सभी देवदूत गए, उसने ऐसा किया। उसने किया।

अभी उम्मीद है। अभी उम्मीद है। तो, एक लंबा, लंबा उत्तर, लेकिन संपूर्ण बाइबिल संदेश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण।

मेरी आवश्यकताओं की पूर्ति कौन करता है? हाँ? मैं अब भी थोड़ा परेशान हूँ। सच्ची धार्मिकता क्या है? अय्यूब एक धर्मी मनुष्य था। उससे सब कुछ छीन लिया गया।

उसे समझ नहीं आया क्यों। उसे कोई उम्मीद नहीं थी कि उसे कुछ वापस मिलेगा। और फिर भी उस ने कहा, यदि परमेश्वर मुझे मार भी डाले, तो भी मैं उस पर भरोसा रखूंगा।

ऐसी कोई उम्मीद नहीं थी कि भगवान मुझे मारने के अलावा कुछ और करने वाले थे। वह पहले ही मेरे साथ बाकी सब कुछ कर चुका था। और फिर भी उसने भगवान पर भरोसा किया।

वह एक धर्मात्मा व्यक्ति बने रहे। मुझे यकीन नहीं है कि मैं भगवान की आज्ञा मानूंगा इसलिए भगवान मेरा ख्याल रखेंगे। मुझे यकीन नहीं है कि यह वास्तव में जीने का एक उचित तरीका है।

अरे नहीं। नहीं, और यदि मैं ऐसा कह रहा हूँ, तो मैं ऐसा नहीं करना चाहता।

मैं कहना चाहता हूँ, भगवान, आप निर्धारित करते हैं कि मेरी आवश्यकताएं क्या हैं, और आप उन्हें अपने तरीके से पूरा करते हैं। और यदि आप यह निर्धारित करते हैं कि मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, और मरना है, तो यह मेरे कहने से बेहतर है, नहीं, मैं इसकी देखभाल स्वयं करने जा रहा हूँ। धन्यवाद।

धन्यवाद। हां हां हां। मैं यह नहीं कहना चाहता, हां, हम भगवान की आज्ञा मानते हैं ताकि वह हमारी जरूरतों को पूरा कर सके।

नहीं, मैं यह कह रहा हूँ कि हम अपनी जरूरतों को भगवान के हाथों में सौंप देते हैं, उन्हें यह तय करने की अनुमति देते हैं कि हमारी वास्तविक जरूरतें क्या हैं, और उन्हें अपने तरीके से पूरा करें। हाँ। धन्यवाद।

धन्यवाद। तो, यह सब आपके प्रश्न से निकल रहा है, डेल। हां, मुझे लगता है कि अगर वास्तव में मैं गरीबों को अपने आशीर्वाद के साधन के रूप में देख रहा हूँ, तो मैं उन्हें उस तरह नहीं देख रहा हूँ जैसे भगवान उन्हें देखता है।

ईश्वर लोगों को साध्य के रूप में देखता है, साधन के रूप में नहीं। और आपको और मुझे भी उन्हें उसी तरह देखना होगा। लेकिन, ईश्वर है, जैसा कि मैंने विभिन्न तरीकों से कहा है, ईश्वर में बहुत कम अभिमान है।

वह अक्सर हमें सबसे संदिग्ध आधारों पर ले जाएगा। उसकी हमें वहां छोड़ने की कोई योजना नहीं है। लेकिन, आप जानते हैं, मुझे लगता है कि इसका उत्कृष्ट उदाहरण जैकब है।

सुखद दुख। यह आदमी बदमाश है। दोगला बदमाश।

जंगल के बीच में एक चट्टान पर अपना सिर रखता है, और भगवान प्रकट होते हैं और कहते हैं, जैकब, मैं तुम्हें आशीर्वाद देना चाहता हूँ। यह अच्छी बात है कि मैं उस समय भगवान नहीं था। जैकब अगली सुबह नहीं उठा होगा।

लेकिन, भगवान कहते हैं, जैकब, मैं तुम्हें किसी भी आधार पर लेने को तैयार हूँ। शुरुआत करने के लिए, शुरुआत करने के लिए, जो लोग निकोलसविले चर्च में जाते हैं वे कुछ हफ्तों में इसके बारे में और अधिक सुन सकते हैं। ठीक है।

अय यि यी। अब, श्लोक 13 और 14 को देखें। वह कहता है, उपवास छोड़ो और क्या करना शुरू करो? सब्त का दिन रखना।

ज़रा ठहरिये। सब्त का दिन मनाने की अपेक्षा उनके उपवास करने की अधिक संभावना क्यों होगी? ठीक है। मुझे लगता है कि यह सही उत्तर है।

वह सोचती है कि वे सब्त के दिन पैसा कमा रहे थे। हाँ। सब्बाथ-पालन वास्तविक अभाव था।

यदि आप सब्त के दिन काम करना छोड़ देते हैं, तो यह आपकी आय का सातवां हिस्सा बर्बाद हो जाएगा। तो, यह बहुत दिलचस्प है। सभी भविष्यवक्ताओं में, आप उन्हें बलिदानों, अनुष्ठान पूजा, और सब्त-पालन की मांग पर हमला करते हुए पाते हैं।

क्योंकि सब्त का पालन करना सचमुच महँगा है। और, मुझे लगता है कि यह बहुत दिलचस्प है कि ये दोनों, जिनके बारे में कोई सोचता होगा कि काफी समान हैं, वास्तव में उनके साथ बहुत विपरीत व्यवहार किया जाता है। ठीक है।

चलो आगे बढ़ें। अध्याय 59, श्लोक 1 से 15ए तक, संपूर्ण बाइबल में कुछ सबसे धूमिल, सबसे धूमिल अंश। प्रभु का हाथ छोटा नहीं हो गया कि बचा न सके, और न उसका कान इतना मन्द हो गया है कि सुन नहीं सकता।

परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम में और तुम्हारे परमेश्वर में दूरी बना दी है। तुम्हारे पापों ने उसका मुख तुम से ऐसा छिपा रखा है कि वह सुन नहीं पाता। तुम्हारे हाथ खून से अपवित्र हो गये हैं।

तुम्हारी अंगुलियाँ अधर्म से भरी हैं। तेरे होठों ने झूठ बोला है। तेरी जीभ दुष्टता का बड़बड़ाती है।

कोई भी न्यायपूर्वक गलती नहीं करता। कोई भी ईमानदारी से कानून के पास नहीं जाता। वे खोखली दलीलों पर भरोसा करते हैं।

वे झूठ बोलते हैं। वे अनर्थ की कल्पना करते हैं और अधर्म को जन्म देते हैं। बहुत खूब।

लेकिन हम भगवान के लोग हैं। इसलिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कैसे रहते हैं। हम निर्वाचित हैं।

वे योजक के अंडे सेते हैं। वे मकड़ी का जाल बुनते हैं। जो उनके अंडे खाता है वह मर जाता है।

जिसे कुचला जाता है, उसमें से एक सांप पैदा होता है। उनके जाले वस्त्र का काम न देंगे। मनुष्य जो कुछ बनाते हैं उससे स्वयं को नहीं ढकेंगे।

उनके काम अधर्म के काम हैं। और हिंसा के काम उनके हाथ में हैं। बहुत खूब।

वह एक बदसूरत सूची है। हाँ। हाँ।

फिर, आप में से कुछ लोग जानते हैं कि मैं टेलीविजन के बारे में कैसा महसूस करता हूँ। टीवी प्रोडक्शन में कितने अरब खर्च होते हैं? और क्या उत्पादित होता है? वे योजक के अंडे सेते हैं। वे मकड़ी का जाल बुनते हैं।

जो उनके अंडे खाता है वह मर जाता है। जिसे कुचला जाता है, उसमें से एक सांप पैदा होता है। उनके जाले वस्त्र का काम न देंगे।

मनुष्य जो कुछ बनाते हैं उससे स्वयं को नहीं ढकेंगे। उनके काम अधर्म के काम हैं। और हिंसा के काम उनके हाथ में हैं।

बहुत खूब। क्या उत्पादित किया जा रहा है? समय, ऊर्जा और धन के इस विशाल, भारी व्यय के साथ? मैं उसे छोड़ दूँगा। उनके पैर बुराई की ओर दौड़ते हैं।

वे निर्दोषों का खून बहाने में तत्पर हैं। उनके विचार अधर्म के विचार हैं। उनके राजमार्गों पर उजाड़ और विनाश है।

शालोम का मार्ग वे नहीं जानते। उनके पथों में कोई दुःस्वप्न, न्याय नहीं है। उन्होंने अपनी सड़कें टेढ़ी-मेढ़ी बना ली हैं।

उन पर चलने वाला कोई भी व्यक्ति शालोम को नहीं जानता। इसलिए, मिशपत, न्याय, हमसे बहुत दूर है। धार्मिकता हम पर हावी नहीं होती।

हम प्रकाश की आशा करते हैं और अंधकार देखते हैं। चमक के लिए, लेकिन हम निराशा में चलते हैं। हम अंधों की तरह दीवार को टटोलते हैं।

हम उन लोगों की तरह टटोलते हैं जिनके पास आँखें नहीं हैं। हम दोपहर को गोधूलि के समान लड़खड़ाते हैं। पूर्ण जोश वाले लोगों के बीच, हम मृत व्यक्तियों के समान हैं।

हम सब भालू की तरह गुर्रते हैं। हम कबूतरों की तरह विलाप और विलाप करते हैं। हमें न्याय की उम्मीद है, लेकिन ऐसा कुछ नहीं है।

मोक्ष के लिए, लेकिन यह हमसे बहुत दूर है। क्योंकि हमारे अपराध तेरे साम्हने बहुत बढ़ गए हैं। हमारे पाप हमारे विरुद्ध गवाही देते हैं।

हमारे अपराध हमारे साथ हैं। हम अपने अधर्मों को जानते हैं। प्रभु का उल्लंघन करना और उसे नकारना।

अपने परमेश्वर का अनुसरण करने से विमुख होना। जुल्म और बगावत बोल रहे हैं। हृदय से झूठे शब्दों की कल्पना करना और उनका उच्चारण करना।

न्याय वापस कर दिया गया है। धार्मिकता दूर खड़ी है। सत्य सार्वजनिक चौकों पर लड़खड़ा गया है।

ईमानदारी प्रवेश नहीं कर सकती। सत्य का अभाव है। जो बुराई से दूर रहता है, वह अपने आप को शिकार बनाता है।

वाह! धर्मकार्य करने में असमर्थता। यहाँ वही है जिसके लिए हमें बुलाया गया है।

यहाँ वह है जो हमें होना आवश्यक है। यहाँ वह है जिसकी विश्व को आवश्यकता है। और हम ऐसा नहीं कर रहे हैं।

अब, मुझे लगता है कि भगवान ने जानबूझकर ऐसा किया। श्लोक के ठीक मध्य में। श्लोक 15.

आप गियर बदलते हैं. प्रभु ने इसे देखा। और यह उसे अप्रसन्न कर गया.

कि कोई न्याय नहीं हुआ. उसने देखा कि वहाँ कोई आदमी नहीं है। आश्चर्य हुआ कि बीच-बचाव करने वाला कोई नहीं था।

तब उसके अपने ही भुजबल ने उसे उद्धार दिलाया। और उसकी धार्मिकता ने उसे कायम रखा. उसने धार्मिकता को कवच के रूप में धारण किया।

उसके सिर पर मोक्ष का टोप। पॉल यशायाह पढ़ रहा था, है ना? उसने प्रतिशोध के वस्त्र पहिन लिये। उन्होंने अपने आप को एक लबादे की तरह जोश में लपेट लिया।

जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल देंगे। अपने विरोधियों पर क्रोध. अपने शत्रुओं को प्रतिशोध.

वह तटवर्ती प्रदेशों को पुनर्भुगतान देगा। इसलिये वे पश्चिम से यहोवा के नाम का भय मानेंगे। सूर्य के उगने से उसकी महिमा।

वह उस तेज़ धारा की तरह आएगा जिसे प्रभु की हवा चलाती है। एक मुक्तिदाता सिंघोन में आयेगा। याकूब में उन लोगों के लिये जो क्या करते हैं? अपने विद्रोह पर पश्चाताप करें.

उनका अपराध. अतः हम धर्मात्मा नहीं हो पाते। हमारे अंदर कोई रोशनी नहीं है.

हमारे अंदर कोई उपचार नहीं है. हममें कोई धार्मिकता नहीं है. हमारे अंदर कोई न्याय नहीं है.

भगवान हमारी पुकार नहीं सुनते. क्या करना होगा? और यहाँ उत्तर क्या है? मुक्तिदाता. मसीहा।

योद्धा। धार्मिकता उसके कवच के रूप में. उसके सिर पर मुक्ति का हेलमेट.

कपड़ों के लिए प्रतिशोध के परिधान. दूसरे शब्दों में, धार्मिकता की आवश्यकता है. किसी ने अध्याय 56, श्लोक 1, अच्छा और ज़ोर से पढ़ा।

धर्म करो. न्याय रखो. कोई अगर, कोई और, कोई परंतु नहीं।

क्यों? क्योंकि मैं आ रहा हूँ. और मैं अपनी धार्मिकता प्रदर्शित करने जा रहा हूँ। धार्मिकता की आवश्यकता है.

ताकि दुनिया को पता चले. हम, यहूदी होने के नाते, धार्मिकता उत्पन्न नहीं कर सकते। योद्धा आता है.

अब, वह किससे लड़ रहा है? वे कैद से वापस आ गए हैं. वे बेबीलोन से वापस आ गए हैं। वह किससे लड़ रहा है? इन लोगों का दुश्मन क्या है? उनके पाप.

हाँ। योद्धा उनके पापों को हराने और उन्हें धर्मी बनने में सक्षम बनाने के लिए आता है। उन्हें अपने आप में धर्मी बनने के अपने प्रयासों पर पश्चाताप करना होगा और उसे उनमें ऐसा करने की अनुमति देनी होगी।

और यह कोई संयोग नहीं है कि अध्याय 60 शुरू होता है, उठो, चमको, क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आ गया है और प्रभु की महिमा तुम्हारे ऊपर बढ़ गई है। ऐसा कोई नहीं है जो उनके लिए ये कर सके. ऐसा कोई भी अकेले नहीं कर सकता.

लेकिन वह ऐसा करने आता है. अब, एक आखिरी बात और मैं तुम्हें यहां जाने दूंगा। श्लोक 16 को देखें.

वह क्या है जो मोक्ष दिलाता है? उसका अपना हाथ. ठीक है? अब आइए अध्याय 53 पर वापस जाएँ। श्लोक 1। हाँ, और आप मुझसे आगे हैं।

उन्होंने जो कुछ हम से सुना उस पर किस ने विश्वास किया? प्रभु की भुजा किस पर प्रकट हुई है? हाँ। वहाँ 53 में, यह एक छोटी सी चीज़ है। असहाय लग रहा है.

अब, यहाँ 59 में, यह 27 इंच का बाइसेप है। अब यह योद्धा है जो आ गया है। वहाँ 53 में, भगवान, अपनी कमजोरी में, दुनिया के पाप को अपने अंदर ले लेते हैं और प्यार वापस देते हैं।

अब, जैसे ही वह हमारे अंदर पाप पर हमला करने के लिए आता है, वह योद्धा के रूप में आता है ताकि हमें वह चीज़ें बनने में सक्षम बनाया जा सके जिसकी वह अपेक्षा करता है। यह वह जगह है जहां, दुर्भाग्य से, उत्तरी अमेरिका के अधिकांश हिस्सों में इंगील धर्मशास्त्र पटरी से उतर गया है। और वह यह है कि, नहीं, हम धर्मी नहीं हो सकते हैं और हमसे कभी भी धर्मी होने की उम्मीद नहीं की जाती है क्योंकि भगवान हमें यीशु के रंग के चश्मे से देखते हैं और सोचते हैं कि हम धर्मी हैं, तब भी जब हम नहीं हैं।

और मैं कहना चाहता हूं कि यह बाइबिल आधारित नहीं है। क्या ईश्वर यीशु के बलिदान के आधार पर हमें निर्दोष घोषित करता है? हाँ वह करता है। उसके पवित्र नाम को आशीर्वाद दें.

और क्या वह हमसे अपेक्षा करता है कि हम पाप करते रहें ताकि अनुग्रह प्रचुर मात्रा में हो? यदि वे रोमियों अध्याय 6 में हैं तो यह देखना मज़ेदार है कि अनुवादक पॉल की बात को विभिन्न तरीकों से समझने की कोशिश करते हैं। भगवान न करे। ऐसा कभी न हो. ऐसा न हो.

मुझे लगता है कि वास्तव में समकालीन संस्करण कहेगा, बिल्कुल नहीं, यार। बिल्कुल नहीं। हाँ, वह क्रूस के सारे पापों के आधार पर हमें निर्दोष घोषित करता है।

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 28, यशायाह अध्याय 58 और 59 है।